मोदी की चीन यात्रा का मूल्यांकन: सांस्कृतिक आयाम

सिद्धार्थ शंकर और कृतांजलि सैकिआ

भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 16 मई, 2015 को भारत के उत्तरी पड़ोसी, चीन के शीआन, बीजिंग और शंघाई की अपनी तीन दिवसीय यात्रा का समापन किया।मोदी की यात्रा में, सांस्कृतिक कूटनीति को केंद्र में लाया गया। इस यात्रा मेंवेटेराकोटा सैन्य संग्रहालय, डेक्सिंगशान बौद्ध मंदिर , विशालकाय जंगली हंस पैगोडा और स्वर्ग मंदिर जैसे कई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के स्थ लोंपर गए।अंतर्राष्ट्रीय मीडिया के एक वर्ग ने भी मोदी की यात्रा को दोनों देशों द्वारा अपनेसॉफ्ट पावर का प्रदर्शन करने की प्रतिस्पर्धा माना है।हाल ही में, शी ने 'वन बेल्ट वन रोड' की महत्वाकांक्षी परियोजना शुरू की, जो चीन को उसके पड़ोसियों से जोड़ती है, जबकि मोदी ने 'प्रोजेक्ट मौसम' को बढ़ावा दिया, जो हिंद महासागर क्षेत्र के देशों के बीच खोए हुए संचार को फिर से जोड़ने और पुनर्स्थापित करने की एक पहल है।

अतीत में, सरकार से सरकार के संपर्कों और मीडिया रिपोर्टों ने भारत -चीन संबंधों को आकार देने में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी और दोनों देशों के लोगों के बीच बहुत कम प्रत्यक्ष संवाद हुआ है।पहली बार किसी भारतीय नेता ने सीधे चीनी लोगों से बात की है। यात्रा की शुरुआत से पहले ही , मोदी ने चीन के लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म , वीबो पर इसका प्रारंभ किया।चीन की आधिकारिक मीडिया ने स्थानीय लोगों के साथ संवाद करने के उनके प्रयासों की प्रशंसा की है।मोदी की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उनके , 'चीन का ट्विटर 'माने जाने वाले,वीबोमें शामिल होने के कुछ ही दिनों के भीतर हीउनके 46,000 फॉलोअर्स हो गए हैं, जो किसी विदेशी नेता का एक दुर्लभ कारनामा है।मोदी ने सोशल मीडिया के अलावा, अपने व्याख्यान और अनौपचारिक बातचीत के माध्यम से भी चीनी छात्रों, आम लोगों और व्यापारिक नेताओं के साथ बात की।

मोदी ने 14 मई को अपनी यात्रा की शुरुआत शीआन से की जो चीनी यात्री और प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान जुआन ज़ैंग या ह्वेन त्सांग से संबंधित है, जिन्होंने 629 और 645 ईस्वी के बीच भारत की यात्रा की थी।इसका उद्देश्य दोनों पड़ोसियों के बीच प्राचीन संबंधों को उजागर करना था। राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने,अपने गृह नगर शी जिन में उनका स्वागत किया, जो कि उनका है। यह मानक प्रोटोकॉल से एक प्रस्थान था और इसे चीनी नेता द्वारा एक पारस्परिक संकेत के रूप में देखा गया था, जिसे 2014 में उनके भारत के दौरे के समय मोदी द्वारा अहमदाबाद में आयोजित किया गया था।इसे व्यापक रूप से एक भारतीय प्रधानमंत्री के उच्चतम स्तर के स्वागत के रूप में देखा गया है।

शीआन के प्राचीन शहर में पहुंचने के बाद , उनकी पहली यात्रा टेराकोटा आर्मी संग्रहालय थी , जिसमें चीन के पहले सम्राट किन शी हुआंग की सेना को दर्शाती टेराकोटा की मूर्तियों का संग्रह है।मोदी डेक्सिंगशान बौद्ध मंदिर भी गए जहां भारत के भिक्षुओं ने 13 शताब्दी पहले पवित्र बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया था।यह यात्रा दोनों देशों के बीच एक आध्यात्मिक संबंध खोजने और मैत्रीपूर्ण संबंधों को आगे बढ़ाने की आशा जगाती है।उन्होंने बौद्ध ग्रंथों को वापस लाने के लिए भारत आने वाले प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ यात्री , ह्वेन त्सांग को समर्पित विशालकाय हंस पैगोडा का भी दौरा किया। उसी दिन, मोदी ने 11 शताब्दियों से अधिक समय तक शासन करने वाले तांग राजवंश के वैभव से प्रेरित एक समारोह में भाग लिया।

सांस्कृतिक संबंधों का प्रदर्शन भारत और चीन के संबंधों का एक महत्वपूर्ण तत्व है।मोदी और शी करिश्माई , राष्ट्रवादी नेता हैं, जो अपने को प्राचीन काल में निहित राष्ट्रीय सम्मान का संरक्षक बताते हैं।उन दोनों ने अतीत को प्रक्षेपित करने और अपनी प्राथमिकताओं को प्राप्त करने के लिए उस बंधन का उपयोग करने की कोशिश की है।यह दोहराया जा सकता है कि भारत और चीन दोनों मात्र समाज नहीं, बल्कि दो हजार वर्षों के साझा इतिहास वाली सभ्यताएं हैं।

वास्तव में, प्रधानमंत्री ने बौद्ध धर्म को भारत की सशक्त नई कूटनीति के केंद्र में रखा है।अपनी यात्रा के दौरान, मोदी ने दोहराया कि धर्म दिल्ली और बीजिंग के बीच एक मूल्यवान बंधन हो सकता है , जिससे सांस्कृतिक कूटनीति के महत्व पर प्रकाश डाला जा सकता है।बौद्ध धर्म पर मोदी का ध्यान आर्थिक विकास में तेजी लाने और देश के भीतर विनिर्माण और

पर्यटन को बढ़ावा देने के माध्यम से नई बुनियादी सुविधाओं का निर्माण करने के उनके प्रयासों को पूरा करता है।मोदी ने बौद्ध धर्म को भारत और चीन के बीच सेतु के रूप में प्रदर्शित किया है , जो चीन में उनके भाषणों में दिए गए विभिन्न उदाहरणों से स्पष्ट है।

मोदी ने बीजिंग के स्वर्ग मंदिर में चीन के प्रधानमंत्री ली केकियांग के साथ योग -ताइची कार्यक्रम में भाग लिया।मोदी की योग की वकालत चीन के प्रति उनके सॉफ्ट पावर का एक और प्रमाण है।मोदी ने फुडन विश्वविद्यालय में गांधीवाद और भारतीय अध्ययन केंद्र का उद्घाटन भी किया।उनकी यात्रा के दौरान , उनके भाषणों और संकेतों का केंद्रीय विषय शांतिपूर्ण सह -अस्तित्व, सद्भाव और पारस्परिक लाभ था।गांधीवादी केंद्र का उद्घाटन करना और योग सत्र में भाग लेना इस बात को प्रमाणित करता है।

इस पर भी विचार करना होगा कि इस तथ्य को देखते हुए कि उनके पास दुनिया की एक तिहाई से अधिक आबादी है और वे वैश्विक आर्थिक विकास के वाहक हैं,दो विशाल पड़ोसियों के बीच एक अच्छा संबंध द्विपक्षीय दायरे से परे के लिए भी महत्वपूर्ण है।चीन और भारत के बीच संबंधों में सहयोग और स्थिरता से केवल उनके लोगों को ही लाभ नहीं होगा, बल्कि एशिया का उत्थान भी होगा।

भारत और चीन के संबंध , वर्षों से उनके सीमा विवादों से प्रभावित हैं।मोदी की हाल ही में समाप्त हुई यात्रा एक दुर्लभ आशा प्रदान करती है क्योंकि यह कूटनीति में 'संस्कृति' और 'नरम शक्ति' के महत्व पर प्रकाश डालती है।मोदी की यात्रा चीन के साथ संबंधों को बढ़ाने और सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से आपसी विश्वास को मजबूत करने में सफल रही है।तेजी से भूमंडलीकृत होती और अन्योन्याश्रित दुनिया में, जिसमें जन संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग एक-दूसरे के लिए पहले से कहीं अधिक आसानी से सुनिश्चित होता है , सांस्कृतिक कूटनीति दुनिया भर में शांति और स्थिरता विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है।चीन के प्रति मोदी का दृष्टिकोण उल्लेखनीय रहा है , पर इसका दायित्व दोनों देशों के लोगों के एक-दूसरे को जानने और लोगों से लोगों को जोड़ने के मजबूत प्रयासों परनिर्भर है।यह मजबूत भारत-चीन संबंधों में योगदान देगा।

*****

**सिद्धार्थ शंकर और कृतांजलि सैकिआ, भारतीय विश्व मामले परिषद, नई दिल्ली में अध्येता हैं*

*

अस्वीकरण: व्यक्त मंतव्य लेखक के हैं और परिषद के मंतव्यों को परिलक्षित नहीं करते।